2 नादान चिड़िया

कहानी

पाठ चर्चा : बच्चो! पक्षियों को पिंजरे में रखना एक अपराध है। एक बार एक सेठ ने सोचा कि क्यों न चिड़िया को पिंजरे में बंद कर लिया जाए। उसने चिड़िया को बातों में उलझाए रखा ताकि इस बीच उसका नौकर चिड़िया को पकड़ सके। सेठ की चालाकी से अनजान चिड़िया एक मुसीबत में फँसते-फँसते कैसे बची, यही इस कहानी में बताया गया है।

सेठ माधवदास ने अपनी संगमरमर की नई कोठी बनवाई। उसमें बहुत मनमोहक बगीचा भी लगवाया। उनको कला से बहुत प्रेम है। उनके पास धन की कमी नहीं है। फूल-पौधे रकाबियों में लगे हैं। फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफ़ी है।

शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का होता जाता है, तब वह कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे गलीचे पर बैठते हैं और प्रकृति की छटा को निहारते हैं।

आज कुछ-कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन-छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उनके देखते-देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आ बैठी। चिड़िया बहुत सुंदर थी।

माधवदास को वह चिड़िया बहुत मनोहारी लगी। कुछ देर तक उस चिड़िया का इस डाल से उस डाल पर थिरकना देखने के बाद उन्होंने चिड़िया से कहा, "सुनो चिड़िया, यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।"

चिड़िया एकाएक घबराई, फिर बोली, "मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने के लिए मैं यहाँ टिक गई थी।"

माधवदास ने कहा, "मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरे परिवार का जी बहलेगा। तुम यहीं क्यों नहीं रह जाती? मेरे पास बहुत-सा सोना है। तेरा घर भी समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनवाऊँगा कि कहीं दुनिया में न होगा। ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक-थिरककर, फुदक-फुदककर मुझे खुश करना।"

चिड़िया बोली, "मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझी नहीं। सूरज की धूप खाने, हवा से खेलने और फूलों से बात करने ज़रा मैं घर से उड़ आई थी। अब साँझ हो गई है, सो माँ के पास जा रही हूँ। आप चिंता न करें।"

माधवदास ने कहा, "भोली चिड़िया, तुम कहाँ रहती हो? तुम मुझे नहीं जानती हो?"

चिड़िया बोली, "मैं माँ को जानती हूँ, भाई को जानती हूँ, सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। तुम कौन हो, मैं नहीं जानती। मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी। मैं अपनी माँ के पास जा रही हूँ।"

माधवदास उसे रोकते हुए बोले, "ठहर-ठहर, अपने पास के इस फूल को तूने देखा? यह एक है। ऐसे अनगिनत फूल मेरे बगीचे में हैं। वे भाँति-भाँति के रंग के हैं। तरह-तरह की उनकी खुशबू है। वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा। तूने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।"

यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज़ हुई, जिसे सुनकर एक नौकर झटपट भागकर बाहर आया। यह सब क्षणभर में हो गया। चिड़िया कुछ भी नहीं समझी।

सेठ का इशारा पाते ही नौकर चिड़िया को पकड़ने के यत्न में जुट गया। इधर चिड़िया को बातों में उलझाए रखने के लिए सेठ जी बोले, "तुम अभी माँ के पास अवश्य जाओ। माँ बाट देखती होगी। पर कल आओगी न? कल आना, परसों आना, रोज़ आना। तुम बहुत सुंदर लगती हो। तुम्हारे भाई-बहन हैं? कितने भाई-बहन हैं?"

चिड़िया ने बताया, "दो बहनें, एक भाई है। पर मुझे देर हो रही है ....."

"हाँ, हाँ, चले जाना। अभी तो उजाला है। दो बहनें, एक भाई है। बड़ी अच्छी बात है ....."

चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी होकर चारों ओर देखती थी। उसने कहा, "मुझे देर हो रही है।"

सेठ ने कहा, "अभी तो उजाला है, मेरी प्यारी चिड़िया। तुम अपने घर का और हाल सुनाओ। डरो मत।"

चिड़िया ने कहा, "मुझे डर लगता है। मैं नादान बच्ची हूँ। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो मुझे राह नहीं सूझेगी।"

सेठ ने समझाया, "डरो मत चिड़िया। तुम बहुत सुंदर हो। मैं तुमको प्रेम करता हूँ।"

इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसकी देह को छू गया है। वह चीखकर चिचियाई और एकदम उड़ गई। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी।

वह एक साँस में उड़ती हुई माँ के पास पहुँची और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी, "ओ माँ, ओ माँ!"

माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, "क्या है मेरी बच्ची, क्या है?"

पर बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई। बोली कुछ नहीं, बस सुबकती रही, "ओ माँ, ओ माँ!"

बहुत देर बाद उसे ढाढ़स बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती से चिपक ऐसे सोई जैसे अब पलक ही न खोलेगी।

—जैनेंद्र कुमार

शब्दार्थ

रकाबियों — चीनी-मिट्टी आदि की बनी कटोरियाँ, तश्तरियाँ; **मसनद** — बड़ा तकिया; **प्रकृति** — कुदरत, स्वभाव; **चित्त** — मन; **प्रफुल्लित** — खुश, हँसता हुआ; **समूचा** — संपूर्ण; **नादान** — नासमझ; **बाट** — इंतज़ार, प्रतीक्षा; **अनगिनत** — असंख्य, जिन्हें गिना न जा सके; **यत्न** — कोशिश; **चौकन्नी** — सजग, सचेत; **उजाला** — रोशनी, प्रकाश

श्रुतलेख : रकाबियों फव्वारों प्रकृति मनोहारी चित्त प्रफुल्लित
खुशबू यत्न चौकन्नी चिचियाई मींच ढाढ़स

अभ्यास

मौखिक कार्य.....

❖ **उत्तर बताओ :**

क. सेठ माधवदास ने चिड़िया को कब देखा?

ख. चिड़िया के मन को चैन क्यों नहीं था?

ग. सेठ ने बटन क्यों दबाया?

घ. माँ की गोद में पहुँचकर चिड़िया क्यों सुबकने लगी?

लिखित कार्य.....

1. दिए गए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखो :

क. सेठ ने चिड़िया को बगीचे में ही रुकने के लिए क्यों कहा?

ख. चिड़िया किस-किसको जानती थी?

ग. सेठ द्वारा बटन दबाने पर क्या हुआ?

घ. नौकर के पंजे से बचने पर चिड़िया ने क्या किया?

2. सही उत्तर के सामने ✓ चिह्न लगाओ :

क. सेठ माधवदास ने संगमरमर का क्या बनवाया?

(i) मेज़ ☐ (ii) कुरसी ☐ (iii) कोठी ☐

ख. माधवदास ने चिड़िया के लिए क्या बनवाने को कहा?

(i) पिंजरा ☐ (ii) घोंसला ☐ (iii) घर ☐

ग. चिड़िया को पकड़ने के लिए किसने पंजा फैलाया?

(i) सेठ ने ☐ (ii) माधवदास ने ☐ (iii) नौकर ने ☐

3. ये वाक्य किसने-किससे कहे?

वाक्य	किसने कहा	किससे कहा
क. यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है।	.....	.....
ख. दो बहनें, एक भाई है। पर मुझे देर हो रही है...	.....	.....
ग. क्या है मेरी बच्ची, क्या है?	.....	.....

4. पाठ के आधार पर वाक्यों को सही घटना-क्रम में लगाओ :

3 गुलाब की डाली पर एक सुंदर चिड़िया आ बैठी।

सेठ ने संगमरमर की कोठी बनवाई।

माधवदास ने चिड़िया को बगीचे में ही रुकने को कहा।

नौकर ने चिड़िया को पकड़ने की कोशिश की।

सेठ ने कोठी में बहुत सुंदर बगीचा लगवाया।

भाषा की बात.....

1. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

बगीचा — ....

सूरज — ....

हवा — ....

पानी — ....

फूल — ....

बादल — ....

2. दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :

प्रेम × ..... पास × ..... प्रकाश × .....

सुंदर × ..... धूप × ..... खुशबू × .....

प्रसन्न × ..... अंदर × ..... कल × .....

3. शब्द-पहेली में छिपे स्त्रीलिंग शब्दों को ढूँढ़कर लिखो :

सेठ — .....

नौकर — .....

चिड़ा — .....

नौ	क	रा	नी	×
से	ठा	नी	मा	ता
रा	नी	ब	च	ची
चि	ड़ि	या	×	×

पिता — .....

राजा — .....

बच्चा — .....

विचार-कौशल.....

❖ **क्या किसी को बहला-फुसलाकर अपना काम निकलवाना ठीक है? सोचकर अपने विचार लिखो।**

.....

.....

.....

रचनात्मक कार्य.....

1. **विभिन्न पक्षियों के पंख एकत्र कर स्क्रैप बुक में लगाओ।**
2. **दिए गए चित्र को देखकर छोटी-सी कहानी लिखो और फिर उसे बाल सभा में सुनाओ।**